DATE 9.5.24
PAGE 1

कुंजी

टेंडर हार्ट स्कूल, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़
कक्षा-आठवीं अध्यापिका - श्रीमती सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (निबंध-जीवन में पड़ोस का महत्व)

जीवन में पड़ोस का महत्व

संकेत-बिंदु - • भूमिका • पड़ोस का महत्व • मेरे पड़ोसी • मेरे पड़ोसी की सहृदयता • उपसंहार।

भूमिका :- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। समाज में वह अनेक प्रकार के संबंध बनाता है और इन्हीं में एक संबंध होता है- पड़ोसी का। पड़ोसी वे हैं, जो हमारे घरों के आस-पास रहते हैं।

पड़ोस का महत्व :- पड़ोसी ही हमारे सुख-दुःख का साथी होता है। कोई भी समय हो हमारे सगे-संबंधी तो बाद में पहुँचेंगे, सबसे पहले आस-पड़ोस के लोग ही हमारे साथ खड़े दिखाई देते हैं। एक अच्छा पड़ोसी समय पड़ने पर उचित सलाह देकर हमारा मार्ग दर्शन करता है तथा यथा संभव मदद भी करता है। यदि पड़ोसी अच्छा मिल जाए, तो जीवन स्वर्ग बन जाता है और पड़ोसी अच्छा न हो, तो फिर राम भरोसे ही जीवन कटता है। बुरे पड़ोसी से बचने के लिए रोज़-रोज़ मकान तो नहीं बदला जा सकता और फिर क्या गारंटी है कि नई जगह पर नया पड़ोसी अच्छा ही होगा। कहीं वह पहले वाले से भी सवा सेर मिल गया, तो फिर भगवान ही बचाए।

मेरे पड़ोसी :- मेरे पड़ोस में रहने वाले श्री विश्वनाथजी मेरे सबसे अच्छे पड़ोसी हैं। वे एक बैंक में काम करते हैं। उनके दो बच्चे हैं - एक बेटा तथा एक बेटी। उनका छोटा-सा परिवार है। कोई भी समय हो उनका परिवार सबकी मदद को तैयार रहता है। मेरे परिवार के साथ

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 9.5.24
PAGE No. 2

कुंजी

कक्षा- आठवीं अध्यापिका - श्रीमती सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (निबंध - जीवन में पड़ोस का महत्व)

उनके संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। वे हमारे परिवार का एक हिस्सा बन गए हैं।

मेरे पड़ोसी की सहृदयता :- एक बार मैं स्कूल गया हुआ था और पिताजी ऑफ़िस गए हुए थे। भैया भी घर पर नहीं थे। जब मैं घर लौटा, तो घर पर ताला लगा पाया। मैं पड़ोसी के घर गया तो उनकी बेटी ने बताया कि उसके माता-पिता और भाई मेरी माताजी को लेकर अस्पताल गए हैं, क्योंकि वह बेहोश होकर गिर पड़ी थी। मैं घबरा गया और मैंने अपने पिताजी और भाई को फ़ोन किया और हम अस्पताल पहुँचे। वहाँ हमारे पड़ोसी ने हमें तसल्ली दी। हमने उनका आभार प्रकट किया। वे बोले पड़ोसी तो सुख-दुख के साथी होते हैं। घबराने की कोई बात नहीं है। माताजी अब ठीक हैं।

उपसंहार :- आज भी जब वह घटना याद आती है, तो विश्वनाथ जी के प्रति मेरा हृदय कृतज्ञता से भर उठता है। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि ऐसा पड़ोसी सबको दे।

सब बच्चे इस कार्य को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बोल-बोलकर लिखेंगे और याद करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner